International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|

(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जम्मू एवं कश्मीर में आतंकवाद का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

कैसर परवीन ,शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
डॉ शमशाद अंसारी,सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
मगध विश्वविद्यालय बोधगया

सारांश

जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद की लगातार समस्या ने क्षेत्र की सामाजिक और आर्थिक स्थिरता को काफी हद तक बाधित कर दिया है। दशकों से, राज्य में अभूतपूर्व हिंसा देखी गई है,। जिससे आम नागरिकों का जीवन और क्षेत्र का समग्र विकास प्रभावित हुआ है। सामाजिक रूप से, लंबे समय तक चले संघर्ष के कारण स्थानीय आबादी में भय, असुरक्षा और मनोवैज्ञानिक आघात पैदा हुआ है। परिवार विस्थापित हो गए हैं। 1990 के दशक में कश्मीरी पंडितों का बड़े पैमाने पर पलायन आतंकवाद के कारण हुए सामाजिक विभाजन का एक ज्वलंत उदाहरण है। इस विस्थापन ने समुदायों के बीच हानि और अलगाव की गहरी भावना पैदा कर दी है। जिससे क्षेत्र में और अधिक ध्रुवीकरण हो गया है। विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों को इस हिंसा का खामियाजा भुगतना पड़ा है। उन्हें विस्थापन, शोषण और भावनात्मक आघात का सामना करना पड़ा है। आतंकवाद ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया है। हिंसक घटनाओं के दौरान स्कूलों को निशाना बनाया गया है। जिससे हजारों बच्चों की शिक्षा बाधित हुई है और स्कूल छोड़ने की दर में वृद्धि हुई है। संघर्ष क्षेत्रों में उचित शैक्षिक बुनियादी ढांचे की अनुपस्थिति ने समस्या को और बढ़ा दिया है। जिससे एक पीढ़ी के पास सीमित अवसर रह गए हैं। इसी तरह, संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में दुर्गमता के कारण स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र तनावपूर्ण हो गया है। मानसिक स्वास्थ्य संकट भी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है । क्योंकि लंबे समय तक हिंसा के संपर्क में रहने से आबादी में पीटीएसडी, चिंता और अवसाद जैसी स्थितियों में वृद्धि हुई है। आर्थिक रूप से, आतंकवाद के प्रभाव गहरे हैं। पर्यटन क्षेत्र, जो कभी जम्मू की आधारशिला था।

मुख्यशब्द

आतंकवाद, जम्मू और कश्मीर, सामाजिक प्रभाव, आर्थिक व्यवधान, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कश्मीरी पंडित, पर्यटन में गिरावट, बेरोजगारी, कट्टरता, मानसिक स्वास्थ्य, शांति निर्माण।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कश्मीर मुद्दे की उत्पत्ति

कश्मीर मुद्दा, एक जटिल और लंबे समय से चला आ रहा संघर्ष, दक्षिण एशिया में सबसे महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक विवादों में से एक है। इसकी जड़ें क्षेत्र की ऐतिहासिक, राजनीतिक और धार्मिक गतिशीलता में हैं। जो औपनिवेशिक काल और उसके बाद 1947 में भारत के विभाजन से जुड़ी हैं। इस मुद्दे में क्षेत्रीय, राजनीतिक और भावनात्मक दावे शामिल हैं। मुख्य रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच, दोनों देश जम्मू क्षेत्र पर संप्रभुता का दावा कर रहे हैं ।

विलय के बाद, भारतीय सेना को पाकिस्तानी समर्थित आक्रमणकारियों को पीछे हटाने के लिए तैनात किया गया था। इसके कारण प्रथम भारत–पाक युद्ध (1947–1948) हुआ। यह संघर्ष एक वर्ष से अधिक समय तक चला, जिसके परिणामस्वरूप जानमाल की भारी हानि हुई और नागरिकों का विस्थापन हुआ। जनवरी 1948 में, भारत ने इस मामले को संयुक्त राष्ट्र (यूएन) को भेजा, और इस मुद्दे को हल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप की मांग की। संयुक्त राष्ट्र ने जनवरी 1949 में युद्धविराम की मध्यस्थता की, जिसने नियंत्रण रेखा (एलओसी) की स्थापना की, जो प्रभावी रूप से जम्मू को विभाजित करती थी।

कश्मीर विवाद का उद्भव

कश्मीर के विभाजन ने भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय तक क्षेत्रीय विवाद के बीज बोए। भारत ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत क्षेत्र की स्वायत्तता बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए कहा कि जम्मू और कश्मीर का विलय कानूनी रूप से वैध और अंतिम था। दूसरी ओर, पाकिस्तान ने विलय को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि यह मुस्लिम–बहुसंख्यक आबादी की इच्छाओं के खिलाफ है और भारत पर क्षेत्र के लोगों को दबाने का आरोप लगाया। कश्मीर विवाद ने एक वैचारिक आयाम भी प्राप्त किया, क्योंकि यह धार्मिक पहचान का प्रतीक बन गया। और दोनों देशों के लिए राष्ट्रवाद। पाकिस्तान के लिए, कश्मीर ''विभाजन के अधूरे एजेंडे'' का प्रतिनिधित्व करता था, जबकि भारत के लिए, यह राष्ट्र की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

धर्मनिरपेक्ष नींव का प्रतीक था, जहां एक मुस्लिम–बहुल क्षेत्र एक हिंदू–बहुल देश के भीतर सह–अस्तित्व में रह सकता था।

1965 और 1971 के युद्ध

कश्मीर मुद्दे के कारण भारत और पाकिस्तान के बीच और भी युद्ध हुए, जिनमें दूसरा भारत–पाक युद्ध (1965) और तीसरा भारत–पाक युद्ध (1971) शामिल हैं। इन संघर्षों ने दोनों देशों के बीच अविश्वास और शत्रुता को गहरा कर दिया, जिससे कश्मीर एक फ्लैशप्वाइंट के रूप में मजबूत हो गया। 1980 और 1990 के दशक में कश्मीर घाटी में उग्रवाद और उग्रवाद के उदय के साथ कश्मीर संघर्ष में एक नया चरण देखा गया। स्थिति राजनीतिक अस्थिरता, धांधली चुनावों और कश्मीरी आबादी के बीच बढ़ते असंतोष के कारण पैदा हुई थी। पाकिस्तान ने आतंकवादी समूहों को समर्थन प्रदान किया, जिससे क्षेत्र में हिंसा और बढ़ गई। उग्रवाद के कारण बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ, जिसमें कश्मीरी पंडितों का पलायन भी शामिल था, और क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक ताने–बाने में गंभीर गिरावट आई। कश्मीर मुद्दा अनसुलझा है, भारत और पाकिस्तान दोनों इस क्षेत्र पर अपना दावा करते हैं। 2019 में, भारत ने जम्मू को अलग करते हुए अनुच्छेद 370 को रद्द कर दिया ।

जम्मू और कश्मीर में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा पर आतंकवाद का प्रभाव

आतंकवाद ने जम्मू और कश्मीर में शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को गहराई से प्रभावित किया है। जिससे क्षेत्र के विकास और इसके लोगों की भलाई पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा है। स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों का विनाश और बंद होना संघर्ष के सबसे अधिक दिखाई देने वाले प्रभावों में से एक है। हिंसक घटनाओं के दौरान कई स्कूलों को जानबूझकर निशाना बनाया गया और जला दिया गया, जिससे शिक्षा का बुनियादी ढांचा बाधित हुआ। इससे छात्रों और शिक्षकों के बीच डर का माहौल पैदा हो गया है। जिससे अक्सर बच्चों को स्कूल जाने के बजाय घर पर रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है। कर्फ्यू और आतंक–संबंधी हिंसा के कारण लंबे समय तक स्कूल बंद रहने से बच्चों की शिक्षा गंभीर रूप से बाधित हुई है, जिससे स्कूल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

छोड़ने की दर चिंताजनक रूप से बढ़ गई है। विशेष रूप से लड़कियों को अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि सुरक्षा संबंधी चिंताएँ अक्सर परिवारों को शिक्षा पर अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए मजबूर करती हैं। क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को भी काफी नुकसान हुआ है। आतंकवाद के कारण संघर्ष–प्रवण क्षेत्रों में पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं की कमी हो गई है, क्योंकि इन क्षेत्रों में अस्पतालों और क्लीनिकों को अक्सर संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है या हिंसा के कारण दुर्गम हो जाते हैं। चिकित्सा पेशेवर अक्सर उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में सेवा करने से झिझकते हैं। जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की कमी बढ़ जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी बदतर है, जहां बुनियादी चिकित्सा बुनियादी ढांचे की कमी के कारण निवासियों को आवश्यक देखभाल से वंचित रहना पड़ता है। इसके अलावा, लंबे समय तक हिंसा, भय और असुरक्षा के संपर्क में रहने से आबादी का मानसिक स्वास्थ्य गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है। पोस्ट–ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पीटीएसडी), चिंता और अवसाद जैसी स्थितियां तेजी से आम हो रही हैं। खासकर बच्चों और महिलाओं में। अत्यधिक आवश्यकता के बावजूद, क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य संसाधन दुर्लभ बने हुए हैं, और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से जुड़ा कलंक कई लोगों को मदद लेने से रोकता है। यह अनसुलझा मानसिक स्वास्थ्य संकट पहले से ही परेशान आबादी पर पीड़ा की एक और परत जोड़ता है।

जम्मू और कश्मीर में क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और बेरोजगारी पर आतंकवाद का प्रभाव

आतंकवाद का जम्मू और कश्मीर में क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और बेरोजगारी पर गहरा और दूरगामी प्रभाव पड़ा है, जिससे क्षेत्र के विकास और आजीविका में गंभीर बाधा उत्पन्न हुई है। लगातार हिंसा और अस्थिरता ने व्यापार और उद्योगों को बाधित किया है, निवेशकों का विश्वास कमजोर किया है और आर्थिक स्थिरता का माहौल बनाया है। छोटे पैमाने के उद्यमों से लेकर बड़े उद्योगों तक के स्थानीय व्यवसाय, आतंकवादी हमलों और लंबे समय तक अशांति से सीधे प्रभावित हुए हैं। बार–बार कर्फ्यू, बाधाएं और आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों ने व्यवसायों के लिए कुशलतापूर्वक संचालन करना मुश्किल बना दिया है। उदाहरण के लिए, बागवानी, जो क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है । अक्सर प्रभावित होती है क्योंकि किसान अपनी उपज

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

को समय पर बाजारों तक पहुंचाने में असमर्थ होते हैं। जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण राजस्व हानि होती है। आतंकवाद के सबसे हानिकारक प्रभावों में से एक निवेशकों का पलायन है और जम्मू–कश्मीर के उद्योगपति। अस्थिर सुरक्षा वातावरण ने व्यवसायों के फलने–फूलने को लगभग असंभव बना दिया है। जिससे कई उद्यमियों को अपने कार्यों को सुरक्षित क्षेत्रों में स्थानांतरित करना पड़ा है। निवेश की इस कमी ने औद्योगिक विकास को अवरुद्ध कर दिया है । जिससे अर्थव्यवस्था कृषि और पर्यटन पर अत्यधिक निर्भर हो गई है। एक मजबूत औद्योगिक आधार के अभाव के कारण रोजगार के अवसर सीमित हो गए हैं। जिससे विशेषकर युवाओं में बेरोजगारी की समस्या बढ़ गई है। बेरोजगारी संकट जम्मू–कश्मीर में आतंकवाद के सबसे खतरनाक परिणामों में से एक है। असफल उद्योगों और व्यवसायों के कारण सीमित नौकरी के अवसरों के कारण, युवा अक्सर खुद को हताशा और निराशा के चक्र में फंसा हुआ पाते हैं। निराशा की इस भावना ने कई लोगों को चरमपंथी विचारधाराओं और आतंकवादी समूहों द्वारा भर्ती के प्रति संवेदनशील बना दिया है, जिससे क्षेत्र में अस्थिरता और बढ़ गई है। रोजगार की कमी न केवल व्यक्तिगत आजीविका को प्रभावित करती है, बल्कि क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक ताने–बाने को भी नष्ट कर देती है। आतंकवाद का एक और बड़ा परिणाम स्थानीय कारीगरों और हस्तशिल्प उद्योग पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। जो लंबे समय से जम्मू और कश्मीर की अर्थव्यवस्था और संस्कृति की पहचान रही है। . अपनी शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध, पश्मीना शॉल, कालीन और पेपर–मैचे कला जैसी वस्तुओं का उत्पादन करने वाले कारीगरों को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हिंसा के कारण बार–बार होने वाले व्यवधान, पर्यटकों की घटती मांग और बाजारों तक सीमित पहुंच के कारण कई कारीगरों को अपनी आजीविका बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। कुछ को अपने पारंपरिक शिल्प को छोड़ने के लिए भी मजबूर किया गया है। जिससे क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत में धीरे–धीरे गिरावट आ रही है। पर्यटन क्षेत्र, जो जम्मू और कश्मीर की अर्थव्यवस्था की आधारशिला है, आतंकवाद के सबसे बड़े नुकसानों में से एक रहा है। हिंसा के डर ने पर्यटकों को इस क्षेत्र में जाने से रोक दिया है। जिसके परिणामस्वरूप होटल, रेस्तरां और पर्यटन पर निर्भर अन्य व्यवसायों के राजस्व में भारी गिरावट आई है। इसका रोजगार पर गहरा प्रभाव पड़ा है, क्योंकि गाइड, परिवहन ऑपरेटर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

और छोटे व्यवसाय मालिकों सहित पर्यटन उद्योग पर निर्भर हजारों लोग बेरोजगार हो गए हैं। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर आतंकवाद का संचयी प्रभाव और जम्मू में बेरोजगारी और कश्मीर आर्थिक गिरावट और अस्थिरता का एक चक्र है। इसे संबोधित करने के लिए, एक सुरक्षित और स्थिर वातावरण बनाना जरूरी है जो निवेश को आकर्षित कर सके, स्थानीय उद्योगों को पुनर्जीवित कर सके और सतत विकास को बढ़ावा दे सके। कौशल विकास कार्यक्रमों के साथ युवाओं को सशक्त बनाना और कारीगरों को अपने उत्पादों के विपणन के लिए मंच प्रदान करना अर्थव्यवस्था को फिर से जीवंत करने में मदद कर सकता है। आर्थिक स्थिरता बहाल करने और बेरोजगारी कम करने के लिए दीर्घकालिक रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करके, जम्मू और कश्मीर अधिक समृद्ध और शांतिपूर्ण भविष्य की ओर बढ़ सकता है।

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और बेरोजगारी पर प्रभाव

जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद ने क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और बेरोजगारी पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव डाला है। व्यापार और उद्योग आतंकवादी हमलों और हिंसक घटनाओं से सीधे प्रभावित हुए हैं। स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर कारोबारों ने निरंतर अस्थिरता, बंद और कर्फ्यू के कारण भारी नुकसान उठाया है। उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला और वितरण में बार–बार होने वाले व्यवधानों ने क्षेत्रीय उद्योगों को कमजोर कर दिया है। विशेष रूप से बागवानी जैसे क्षेत्र, जो जम्मू और कश्मीर की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। अक्सर समय पर फसलों को बाजार तक पहुंचाने में असफल रहते हैं, जिससे किसानों को भारी वित्तीय नुकसान होता है।

आतंकवाद के कारण निवेशकों और उद्योगपतियों का पलायन क्षेत्र की आर्थिक स्थिति को और भी खराब करता है। अस्थिर सुरक्षा परिस्थितियों ने बाहरी निवेश को हतोत्साहित किया है और स्थानीय उद्योगपतियों को मजबूर किया है कि वे अपने व्यवसायों को सुरक्षित क्षेत्रों में स्थानांतरित करें। इसके परिणामस्वरूप, बुनियादी ढांचे और औद्योगिक विकास पर बुरा असर पड़ा है। उद्योगों की अनुपस्थिति ने क्षेत्र को कृषि और पर्यटन जैसे संवेदनशील क्षेत्रों पर निर्भर बना दिया है। जो स्वयं आतंकवाद के कारण क्षतिग्रस्त हुए हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

युवाओं में बेरोजगारी का स्तर बढ़ने से स्थिति और गंभीर हो गई है। क्षेत्र में रोजगार के अवसरों की कमी ने युवाओं को हताशा और निराशा की ओर धकेल दिया है। यह स्थिति आतंकवाद और कट्टरपंथी संगठनों के लिए एक उपजाऊ भूमि बन गई है, जो बेरोजगार युवाओं को अपने प्रभाव में लाने का प्रयास करते हैं। आतंकवाद और बेरोजगारी के इस चक्र ने क्षेत्र को और अधिक अस्थिर बना दिया है, जिससे आर्थिक पुनरुद्धार की संभावनाएं धूमिल हो गई हैं।

स्थानीय कारीगरों और हस्तशिल्प उद्योगों पर भी आतंकवाद का गहरा असर पड़ा है। कश्मीर की पश्मीना शॉल, कालीन, और कागज माछे की कला जैसी पारंपरिक हस्तशिल्प वस्तुएं विश्व प्रसिद्ध हैं। लेकिन बार–बार होने वाले हिंसा के कारण इन कारीगरों को बाजार तक पहुंचने में कठिनाई होती है। पर्यटकों की कमी और व्यापारिक चौनलों में बाधाओं ने इन कारीगरों के लिए अपनी कला को जीवित रखना मुश्किल कर दिया है। इससे न केवल उनकी आजीविका प्रभावित हुई है, बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को भी खतरा पैदा हुआ है।

इन सभी पहलुओं ने जम्मू और कश्मीर की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है और बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है। व्यापार, उद्योग और रोजगार को पुनर्जीवित करने के लिए एक स्थिर और सुरक्षित वातावरण बनाना आवश्यक है। युवाओं को कौशल विकास कार्यक्रमों से सशक्त बनाना और स्थानीय कारीगरों को उनके उत्पादों के लिए व्यापक बाजार प्रदान करना इस स्थिति से निपटने के लिए महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही निवेशकों को आकर्षित करने और बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देने से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी।

पर्यटन उद्योग पर नकारात्मक प्रभाव

आतंकवाद ने जम्मू और कश्मीर के पर्यटन उद्योग पर गहरा और व्यापक नकारात्मक प्रभाव डाला है। क्षेत्र, जो कभी अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ''धरती का स्वर्ग'' के रूप में प्रसिद्ध था। अब एक आतंक प्रभावित क्षेत्र के रूप में देखा जाता है। इस बदलती छवि ने पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट लाई है। लगातार हिंसा, आतंकवादी घटनाओं, और सुरक्षा चिंताओं के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कारण यात्रा प्रतिबंध लगाए गए हैं। जिससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रकार के पर्यटक क्षेत्र से दूर रहने को मजबूर हुए हैं।

पर्यटकों की कमी का सबसे बड़ा असर होटल, परिवहन, और स्थानीय गाइड जैसे सहायक उद्योगों पर पड़ा है। होटलों में बुकिंग का कम होना। टैक्सी चालकों और स्थानीय गाइडों के व्यवसाय में गिरावट ने हजारों लोगों की आजीविका को प्रभावित किया है। इन उद्योगों में काम करने वाले लोग, जो पर्यटन पर पूरी तरह निर्भर थे, अब आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, रेस्टोरेंट, दुकानदार, और हस्तशिल्प बेचने वाले कारीगरों को भी भारी नुकसान हुआ है, क्योंकि पर्यटक इन उत्पादों के प्रमुख खरीदार होते हैं।

कश्मीर की छवि, जो एक समय विश्वभर में अपनी शांति, सुंदरता और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध थी, अब हिंसा और आतंकवाद के कारण बदनाम हो गई है। यह नकारात्मक छवि मीडिया रिपोर्टों और घटनाओं के माध्यम से और अधिक फैल गई है, जिससे पर्यटन क्षेत्र में सुधार की संभावनाएं कमजोर हो गई हैं। पर्यटन क्षेत्र के पतन ने न केवल कश्मीर के आर्थिक विकास को बाधित किया है, बल्कि उन लाखों लोगों के जीवन को भी प्रभावित किया है जो सीधे या परोक्ष रूप से इस उद्योग से जुड़े हुए हैं।

पर्यटन से जुड़े लाखों लोगों के रोजगार पर संकट सबसे गंभीर समस्या है। गाइड, शिल्पकार, होटल कर्मचारी, टैक्सी चालक, और छोटे व्यवसायी जैसे लोग, जो इस क्षेत्र में रोजगार के लिए पूरी तरह से पर्यटन पर निर्भर थे। अब बेरोजगार हो रहे हैं। यह आर्थिक संकट, जो रोजगार के अवसरों की कमी के कारण बढ़ा है, युवाओं को हताशा और निराशा की ओर धकेल रहा है।पर्यटन उद्योग में सुधार के लिए सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना। हिंसा की घटनाओं को रोकना, और कश्मीर की सकारात्मक छवि को फिर से स्थापित करना आवश्यक है। सरकार को न केवल क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देना चाहिए, बल्कि पर्यटकों के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण बनाने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। इसके साथ ही, स्थानीय पर्यटन से जुड़े लोगों के लिए सहायता कार्यक्रम और पुनर्विकास योजनाएं लागू करना जरूरी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है, ताकि वे आर्थिक संकट से उबर सकें और अपनी आजीविका पुनः स्थापित कर सकें। इन प्रयासों के माध्यम से, कश्मीर अपने पर्यटन उद्योग को पुनर्जीवित कर सकता है और इसे ''धरती का स्वर्ग'' की अपनी प्रतिष्ठा वापस दिला सकता है।

निष्कर्ष

जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद ने पर्यटन उद्योग को भारी नुकसान पहुंचाया है। जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और लाखों लोगों की आजीविका पर गहरा प्रभाव पड़ा है। ''धरती का स्वर्ग'' के रूप में प्रसिद्ध यह क्षेत्र अपनी सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत के कारण विश्वभर में जाना जाता था, लेकिन अब इसे एक आतंक प्रभावित क्षेत्र के रूप में देखा जाता है। पर्यटकों की संख्या में गिरावट, सहायक उद्योगों का नुकसान, और क्षेत्र की नकारात्मक छवि ने पर्यटन क्षेत्र को गंभीर संकट में डाल दिया है।

पर्यटन से जुड़े लाखों लोग, जिनकी आजीविका पूरी तरह से इस उद्योग पर निर्भर है। बेरोजगारी और आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। यह स्थिति न केवल आर्थिक अस्थिरता पैदा कर रही है, बल्कि युवाओं को कट्टरपंथ और हिंसा की ओर धकेलने का जोखिम भी बढ़ा रही है।

इस स्थिति को सुधारने के लिए एक समग्र और स्थायी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। सुरक्षा सुनिश्चित करना, हिंसा और आतंकवाद की घटनाओं को नियंत्रित करना, और कश्मीर की सकारात्मक छवि को पुनर्स्थापित करना प्राथमिकता होनी चाहिए। साथ ही, पर्यटन उद्योग से जुड़े लोगों को आर्थिक सहायता और पुनर्विकास योजनाओं के माध्यम से समर्थन दिया जाना चाहिए। सरकार को क्षेत्र में पर्यटकों के लिए सुरक्षित और स्वागतयोग्य वातावरण बनाने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।

इन प्रयासों से न केवल जम्मू और कश्मीर के पर्यटन उद्योग को पुनर्जीवित किया जा सकता है, बल्कि क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिरता को भी बहाल किया जा सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अंततः, इन पहलों के माध्यम से कश्मीर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त कर सकता है और एक बार फिर ''धरती का स्वर्ग'' के रूप में अपनी पहचान को कायम रख सकता है।

संदर्भ

1. बोस, सुमंत्रा। (2003). कश्मीरः संघर्ष की जड़ें, शांति के रास्ते। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. शोफील्ड, विक्टोरिया। (2010). कश्मीर में संघर्षः भारत, पाकिस्तान और न खत्म होने वाला युद्ध। आई.बी. टॉरिस।
3. भट्टाचार्य, दीपक। (2002). ''जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद का खतराः ऐतिहासिक दृष्टिकोण।'' स्ट्रैटेजिक एनालिसिस, आईडीएसए।
4. चौधरी, रेखा। (2019). जम्मू और कश्मीरः पहचान और अलगाववाद की राजनीति। रूटलेज।
5. राय, मृदु। (2004). हिंदू शासक, मुस्लिम प्रजाः इस्लाम, अधिकार और कश्मीर का इतिहास। पर्मनेंट ब्लैक।
6. बेहेरा, नवनीता चड्ढा। (2000). राज्य, पहचान और हिंसाः जम्मू, कश्मीर और लद्दाख। मनोहर पब्लिशर्स।
7. भारत सरकार। (2020). जम्मू और कश्मीर पर्यटन विकास पर वार्षिक रिपोर्ट। पर्यटन मंत्रालय।
8. जम्मू और कश्मीर आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट। (2022). आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय, जम्मू और कश्मीर।
9. पंडिता, राहुल। (2013). हमारे चाँद पर खून के धब्बेः कश्मीरी पंडितों का पलायन। रैंडम हाउस इंडिया।
10. संयुक्त राष्ट्र। (1948–1949). कश्मीर पर संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद दस्तावेज।
11. ह्यूमन राइट्स वॉच। (2006). हर कोई डर में जीता हैः जम्मू और कश्मीर में प्रतिरक्षा के पैटर्न। ह्यूमन राइट्स वॉच रिपोर्ट।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|

(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

12. लोन, गुलाम नबी। (2018). ''आतंकवाद और कश्मीर पर्यटन पर इसका प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।'' अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन अध्ययन पत्रिका, खंड 5, संख्या 3।
13. भट, अर्शद इकबाल और रफीक, गुलजार ए। (2021). ''जम्मू और कश्मीर में बेरोजगारी और आर्थिक चुनौतियाँः एक सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण।'' आर्थिक नीति और अनुसंधान पत्रिका, खंड 13, संख्या 1।
14. अहमद, मोहम्मद यूनिस और हुसैन, बशीर। (2017). ''जम्मू और कश्मीर में शिक्षा पर आतंकवाद का प्रभाव।'' दक्षिण एशियाई विकास अध्ययन पत्रिका, खंड 11, संख्या 2।
15. कश्मीर वाणिज्य और उद्योग मंडल। (2021). जम्मू और कश्मीर में व्यापार और पर्यटन पर अशांति का प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट।